विशेष जानकारी के लिए कहाँ संपर्क करें?

- जिला स्तर पर जिला कृषि पदाधिकारी अथवा परियोजना निदेशक, आत्मा से संपर्क करें।
- प्रखंड स्तर पर प्रखंड कृषि पदाधिकारी अथवा प्रखंड विकास पदाधिकारी से संपर्क करें।
- पंचायत स्तर पर कृषि समन्वयक अथवा अपने गाँव के कृषक सलाहकार से संपर्क किया जा सकता है।
- निकट के कृषि विश्वविद्यालय/कृषि महाविद्यालय/कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विशेषज्ञ से उचित सलाह प्राप्त की जा सकती है।
- किसान कॉल सेन्टर के विशेषज्ञ से निःशुल्क सलाह के लिये 1800 180 1551 पर फोन करके भी सलाह प्राप्त की जा सकती है। यह सुविधा निःशुल्क है।

Printed at Vidya Printers, Patna # 9234849923 E-mail : vidyaprintersjp@gmail.com

श्री नरेन्द्र सिंह
मा० कृषि मंत्री, बिहार

बिहार सरकार

कृषि विभाग

श्री जीतन राम मांझी
मा० मुख्यमंत्री, बिहार

किसान जागरूकता महाअभियान-सह-रबी महोत्सव 2014

गेहूँ की समय से बुवाई

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)
पोस्टः बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना – 800 014
Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com

गेहूँ की समय से बुवाई

समय पर गेहूँ की बुवाई क्या है?

- गेहूँ रबी मौसम की सबसे महत्वपूर्ण फसल है।
- गेहूँ की उपज पर समय से बुवाई का सीधा असर पड़ता है।
- 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक बोयी गयी गेहूँ की फसल सबसे अधिक उपज देती है।
- देर से पकने वाली गेहूँ के प्रभेद की 11–25 दिसम्बर तक की बुवाई भी औसत उपज देती है।

गेहूँ की समय पर बुवाई क्यों करें?

- गेहूँ की समय पर बुवाई करने से अधिक उत्पादन प्राप्त होता है।
- गेहूँ की फसल के बाद गरमा फसल की बुवाई समय से की जा सकती है।
- गेहूँ के साथ अंतर्वर्त्ती फसल को लगाकर अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

गेहूँ की समय से बुवाई कैसे करें?

- गेहूँ की समय पर बुवाई दो तरह से की जा सकती है।
- एस.डब्लू.आई. विधि से गेहूँ की खेती करने से कम लागत एवं कम समय में गेहूँ की बुवाई कर सकते हैं।
- जीरो टिलेज मशीन की सहायता से गेहूँ की बुवाई बहुत आसानी से बड़े क्षेत्रफल में की जा सकती है।
- कम्बाइन हार्वेस्टर से धान की कटाई वाले क्षेत्रों में टर्बो सीडर मशीन से गेहूँ की खेती धान के ठूँठ के साथ की जा सकती है।
- प्रचलित तरीके से धान की कटाई वाले क्षेत्रों में रेज्ड बेड प्लाण्टर मशीन से भी गेहूँ की खेती की जा सकती है और न्यूनतम पानी में अधिकतम उपज प्राप्त की जा सकती है।
- पर्याप्त नमी वाले खेतों में छिटकवाँ विधि से भी गेहूँ की बुवाई समय से की जा सकती है।

समय से गेहूँ बुवाई का प्रभाव

- समय से बोयी जाने वाली गेहूँ के प्रभेद की बुवाई 15 नवम्बर से 10 दिसम्बर तक करने से सबसे अच्छी उपज प्राप्त होती है।
- गेहूँ की विलम्ब से बुवाई (11 दिसम्बर के बाद) करने पर 35 किलो प्रति दिन प्रति हेक्टेयर उपज में कमी होती है।
- अत्यंत विलम्ब से गेहूँ की बुवाई (15 दिसम्बर के बाद) करने पर 50–60 किलो प्रति दिन प्रति हेक्टेयर उपज में कमी होती है।
- समय पर गेहूँ की बुवाई करने से गेहूँ में क्रांतिक जड़ो का काफी विकास होता है।
- क्रांतिक जड़ों के विकसित होने से गेहूँ के एक दाने से अधिकतम कल्ले निकलते हैं।
- फसल का तेजी से एवं समान रूप से विकास होता है।
- फसल की वानस्पतिक वृद्धि एवं प्रजनन अवस्था के लिये पर्याप्त समय मिलता है।
- मौसम परिवर्तन के परिपेक्ष्य में फसल का जोखिम बहुत कम हो जाता है।